चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक जागरण........

दिनांक 9.11.2020 पृष्ठ संख्या.......3.......कॉलम.......2-5.......

गेहूं फसल चक्र में बदलाव समय की मां

गिरता भूमिगत जलस्तर चिंतनीय : वीसी

जागरण संवाददाता, हिसार : गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। यह बातें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कही। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया।

उन्होंने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए, ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों को जागरूक करते हुए कहा कि वह खेतों में अवशेष न जलाएं। इससे पर्यावरण भी प्रदूषित होता है और भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी असर पड़ता है।

प्रो समर सिंह • जागरण आर्काइव

अनुदान पर मिल रहे कृषि यंत्र

कृषि विज्ञान केंद्र, कैथल के मुख्य विज्ञानी डा. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के लिए कस्टम हायर केंद्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हर गांव में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं, ताकि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करके अपनी जमीनों की उर्वरा शक्ति बढ़ा सकें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 9.11.2020....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....6.8.....

गिरता भूजलस्तर व घटती उर्वरा शक्ति चिंतनीय : समर सिंह

कृषि विज्ञान केंद्र कैथल में किसान मेले का आयोजन

हिसार, 8 नवम्बर (ब्यूरो): गिरते भूजलस्तर और घटती जोत के चलते फसल चक्र अपनाकर न सिर्फ किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं, बल्कि भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि खेत में लगातार धान व गेहूं लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है।

किसान मेले के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह व मौजूद अन्य अधिकारी।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान सम्मानित : कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने गेहूं की बिजाई के लिए हैप्पी सीडर व जीरो टिलेज यंत्र पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने केन्द्र द्वारा विकसित गेहूं की उन्नत किस्मों की सस्य क्रियाओं के बारे में बताया। इस दौरान मुख्यातिथि प्रो. समर सिंह ने संरक्षित खेती में विशेष योगदान के लिए डॉ. अनिल खिप्पल व उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 30 किसानों को सम्मानित किया। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. जसबीर सिंह व डॉ. संजय कुमार ने बताया कि इस मेले में 300 किसानों ने भाग लिया तथा सरकारी व गैर सरकारी 10 कम्पनियों और प्रगतिशील किसानों ने प्रदर्शनी स्टाल लगाए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**09.11.2020**	——	--

गिरता भूमिगत जलस्तर और भूमि की घटती उर्वरा शक्ति चिंतनीय : प्रोफसर समर सिंह

हैलो हिसार न्यूज

हिसार : गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन

परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि

धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव समय की मांग : प्रोफेसर समर सिंह

आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान सम्मानित

कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबन्धन के लिए कस्टम हायर केंद्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हर गांव में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**09.11.2020**	——	--

कृषि मेला कृषि विज्ञान केंद्र में किसान मेले में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान सम्मानित

'भूमि की घटती उर्वरा शक्ति चिंतनीय'

सच कहूं/संदीप सिंहमार
हिसार।

गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरुरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं।

उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की। कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबन्धन के लिए कस्टम हायर केंद्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हर गांव में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं ताकि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबन्धन करके अपनी जमीनों की उर्वरा शक्ति बढ़ा सकें।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व मौजूद अन्य अधिकारी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**09.11.2020**	——	--

धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव समय की मांग : कुलपति

हिसार, 8 नवंबर (सुरेंद्र सोडी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। कुलपति ने कहा कि ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. जसबीर सिंह व डॉ. संजय कुमार ने बताया कि इस मेले में 300 किसानों ने भाग लिया तथा सरकारी व गैर सरकारी 10 कम्पनियों और प्रगतिशील किसानों ने प्रदर्शनी स्टाल लगाए।

किसान मेले के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व मौजूद अन्य अधिकारी।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान सम्मानित

कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबन्धन के लिए कस्टम हायर केंद्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हर गांव में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं ताकि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबन्धन करके अपनी जमीनों की उर्वरा शक्ति बढ़ा सकें। इसके अलावा उन्होंने गेहूं की बिजाई के लिए हैप्पी सीडर व जीरो टीलेज यंत्र पर भी प्रकाश डाला।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	**09.11.2020**	——	--

गिरता भूमिगत जलस्तर और भूमि की घटती उर्वरा शक्ति चिंतनीय : प्रोफसर समर सिंह

वाटिका@हिसार। गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल

बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल हिसार	**08.11.2020**	——	--

गिरता भूमिगत जलस्तर और भूमि की घटती उर्वरा शक्ति चिंतनीयः प्रो. समर सिंह

पल पल न्यूजः हिसार, 8 नवंबर। गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद

दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की। कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबन्धन के लिए कस्टम हायर केंद्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हर गांव में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं ताकि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबन्धन करके अपनी जमीनों की उर्वरा शक्ति बढ़ा सकें। इस दौरान मुख्यातिथि प्रोफेसर समर सिंह ने संरक्षित खेती में विशेष योगदान के लिए डॉ. अनिल खिप्पल व उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 30 किसानों को सम्मानित किया। कृषि विज्ञान केंद्र अंबाला के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने किसानों को कृषि वानिकी व फसल अवशेष प्रबंधन पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**08.11.2020**	——	--

धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव समय की मांगः प्रो. समर सिंह

हिसार | गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	**08.11.2020**	——	--

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी : कुलपति

हिसार/08 नवंबर/रिपोर्टर

गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को

आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की। कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबन्धन के लिए कस्टम हायर केंद्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हर गांव में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं ताकि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबन्धन करके अपनी जमीनों की उर्वरा शक्ति बढ़ा सकें। इसके अलावा उन्होंने गेहूं की बिजाई के लिए हैप्पी सीडर व जीरो टीलेज यंत्र पर भी प्रकाश डाला। उन्होनें केन्द्र द्वारा विकसित गेहूं की उन्नत किस्मों की सस्य क्रियाओं के बारे में बताया। इस दौरान मुख्यातिथि प्रोफेसर समर सिंह ने संरक्षित खेती में विशेष योगदान के लिए डॉ. अनिल खिप्पल व उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 30 किसानों को सम्मानित किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**08.11.2020**	——	--

गिरता भूमिगत जलस्तर और भूमि की घटती उर्वरा शक्ति चिंतनीय : प्रोफसर समर सिंह

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 8 नवम्बर : गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत

किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**08.11.2020**	——	--

कृषि विज्ञान केंद्र कैथल में किसान मेले में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान सम्मानित

धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव समय की मांग : प्रो. समर सिंह

पांच बजे न्यूज

हिसार। गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति

घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान सम्मानित

कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबन्धन के लिए कस्टम हायर केंद्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हर गांव में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं ताकि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबन्धन करके अपनी जमीनों की उर्वरा शक्ति बढ़ा सकें। इसके अलावा उन्होंने गेहूं की बिजाई के लिए हैप्पी सीडर व जीरो टीलेज यंत्र पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने केन्द्र द्वारा विकसित गेहूं की उन्नत किस्मों की सस्य क्रियाओं के बारे में बताया। इस दौरान मुख्यातिथि प्रोफेसर समर सिंह ने संरक्षित खेती में विशेष योगदान के लिए डॉ. अनिल खिप्पल व उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 30 किसानों को सम्मानित किया। कृषि विज्ञान केंद्र अंबाला के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने किसानों को कृषि यानिकी व फसल अवशेष प्रबंधन पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। डॉ. सज्जन सिंह, कृषि विकास अधिकारी (कृषि अभियन्ता) ने किसानों को फसल अवशेष प्रबन्धन पर सरकार द्वारा चलाई गई विभिन्न स्कीमों के बारे में बताया। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. जसबीर सिंह व डॉ. संजय कुमार ने बताया कि इस मेले में 300 किसानों ने भाग लिया तथा सरकारी व गैर सरकारी 10 कम्पनियों और प्रगतिशील किसानों ने प्रदर्शनी स्टाल लगाए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....दैनिक भास्कर....

दिनांक ..8.11.2020.. पृष्ठ संख्या ....5.... कॉलम ....5-7....

एचएयू में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड के लिए 31 दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन

अवॉर्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी

हिसार | एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवॉर्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवॉर्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवॉर्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैक्लटी मेंबर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवॉर्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए।

इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवॉर्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवॉर्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा।

आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्मा में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....अमर उजाला........

दिनांक ..8.11.2020.. पृष्ठ संख्या ....4.... कॉलम ....1-2....

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड के लिए मांगे आवेदन

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। अवॉर्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर है। विवि के कुलपति प्रो. समर सिंह ने बताया कि इस अवॉर्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। इस अवॉर्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवॉर्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवॉर्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्मा में संक्षिप्त बायोडाटा सहित अपने आवेदन को सीधे विवि के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ......दैनिक जागरण......

दिनांक 8.11.2020 पृष्ठ संख्या ......3...... कॉलम ......1......

एचएयू ने लाइफ टाइम अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

जासं, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डा. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर है।

विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकल्टी मेंबर या अधिकारी द्वारा की गई उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता की उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	**08.11.2020**	——	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रूपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैक्लटी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है।

इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्मा में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।

स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा का फाइल फोटो।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	**08.11.2020**	——	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

31 दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन

हिसार (सच कहूं न्यूज)।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्षत्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रूपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकलटी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा क्षत्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्मा में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**08.11.2020**	——	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रूपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैक्लटी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा।

31 दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	**08.11.2020**	——	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रुपए की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैक्लटी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्मा में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।

31 दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार न्यूज	**07.11.2020**	——	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

31 दिसम्बर तक कर सकते हैं आवेदन

हिसार, 7 नवम्बर (राज पराशर) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डा. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रूपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैक्लटी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डा. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्मा में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**07.11.2020**	——	--

हकृवि ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए 31 दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्रात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रूपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैक्लटी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है।

इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए।

डॉ. आशा क्रात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**08.11.2020**	——	--

हकृवि ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

डॉ. आशा छात्रा

हिसार, (सुरेंद्र सौढ़ी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा छात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 20,20 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रूपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकलटी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा छात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्मा में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**07.11.2020**	——	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन आमंत्रित

31 दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्षात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय की आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रूपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैक्लटी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस

अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए।

डॉ. आशा क्षात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्मा में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**07.11.2020**	——	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन, 31 दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन

हिसार।चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रूपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैक्लटी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्मा में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	**07.11.2020**	——	--

सार समाचार

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

पल पल न्यूज: हिसार, 7 नवंबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्षात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रूपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकल्टी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	**07.11.2020**	ऑनलाइन	--

हिसार

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

SHARE 0

31 दिसंबर तक किए जा सकेंगे आवेदन

हिसार,
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकल्टी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफार्मा में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक जागरण........

दिनांक 8.11.2020 पृष्ठ संख्या 3 कॉलम 2-6

जागरूकता साहू में किसान मेला, अब हर कृषि विज्ञान केंद्र पर किसान मेले आयोजित कर रहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इसका आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में विज्ञानियों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का गेट • जागरण आर्काइव

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्मॉग वाली धुंध : अभियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं, जो स्मॉग यानी धुएं वाली धुंध का कारण बनती हैं। इससे लोगों की सांस संबंधी परेशानियां बढ़ जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी में मौजूद फायदेमंद जीवाणु व केंचुए भी मर जाते हैं। डा. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी अधिकारी डा. सुरेंद्र सिहाग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉलीहाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।

जीरो ड्रिल और हैप्पी सीडर का प्रयोग कर करें गेहूं की बिजाई

कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डा. नरेंद्र कुमार ने कहा कि पराली जलाने की नहीं, बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई करने का आह्वान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक ...9...11...2022....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....1-2.....

किसानों को संबोधित करते कृषि अधिकारी। *(गोयल)*

किसानों को जागरूक करने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र ने लगाया मेला

पराली जलाना सेहत और भूमि के लिए हानिकारक

मंडी आदमपुर, 8 नवम्बर (गोयल): सदलपुर के कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा साहू गांव में इन सीटू क्रॉप रेसिदू मैनेजमैंट परियोजना के तहत फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर किसान मेले का आयोजन किया गया। इसमें आसपास के गांवों से 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवार नियंत्रण, बागवानी व पशु पालन की जानकारी दी गई।

कोरोना संक्रमण को लेकर मेले में विशेष सावधानी बरती गई सभी किसानों को मास्क वितरित किए गए। इस मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी व अन्य विभागों की स्टाल एग्जीबिशन भी लगाई गई।

केंद्र के को-ऑर्डिनेटर डा. नरेंद्र कुमार ने किसानों को बताया कि पराली जलाने की नहीं, बल्कि उसे मिट्टी में मिलाकर गलाने की जरूरत है, ताकि जमीन का स्वास्थ्य व उपजाऊपन सुधरे। डा. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने और जैविक जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं।

जिला बागवानी अधिकारी डा. सुरेंद्र सिहाग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार की स्कीमों जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉली हाऊस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी किसान को दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम अमर उजाला

दिनांक 8.11.22 पृष्ठ संख्या 4 कॉलम 1-2

किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर किया जागरूक

मंडी आदमपुर। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेला आयोजित किया जा रहा है। इसी कड़ी में कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। अभियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं जो स्मॉग यानी धुएं वाली धुंध का कारण बनती हैं। डॉ. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक भास्कर.....

दिनांक 8.11.2020.....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....8.....

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने साहू में लगाया किसान मेला

हिसार| चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शनिवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......हरि भूमि......

दिनांक ..8.11.2020.......पृष्ठ संख्या.......9.......कॉलम.......7-8.......

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान : वैज्ञानिक

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिलास्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं।

अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई करने का आह्वान किया ताकि फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उवर्रा शक्ति बढ़ाई जा सके।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	**08.11.2020**	——	--

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान : वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में आयोजित किया किसान मेला

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया।

मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई करने का आह्वान किया ताकि फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उवर्रा शक्ति बढ़ाई जा सके। मेले में आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवार नियंत्रण, बागवानी व पशु पालन की जानकारी दी गई। कोरोना संक्रमण के चलते सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटाइजेशन का विशेष ध्यान रखा गया। इस दौरान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी वह अन्य विभागों की स्टाल भी लगाई गई।

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर द्वारा गांव साहू में आयोजित किसान मेले में मौजूद किसान व संबोधित करते वक्ता।

प्रत्येक केवीके में लगाए जाएंगे किसान मेले

विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-निदेशक (किसान परामर्श केंद्र) डॉ. सुनील ढांडा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अक्तूबर में आयोजित वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेषों के बीच में ही हैप्पी सीडर व जीरो टिलेज से बिजाई जैसी जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्मॉग वाली धुंध : अभियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं जो स्मॉग यानी धुएं वाली धुन्ध का कारण बनती हैं। इससे लोगों की शवसन संबंधी परेशानियां बढ़ जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी में मौजूद फायदेमंद जीवाणु व केंचुएं भी मर जाते हैं। डॉ. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी अधिकारी डॉ.सुरेंद्र सिहाग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉलीहाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**08.11.2020**	——	--

हिसार-आसपास

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान

वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब हर कृषि विज्ञान केंद्र पर किसान मेले आयोजित कर रहा एचएयू

टुडे न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया।

मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई करने का आह्वान किया ताकि फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उवर्रा शक्ति बढ़ाई जा सके। मेले में आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवार नियंत्रण, बागवानी व पशु पालन की जानकारी दी गई। कोरोना संक्रमण के चलते सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटाइजेशन का विशेष ध्यान रखा गया। इस दौरान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी वह अन्य विभागों की स्टाल भी लगाई गई। अभियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं जो स्मॉग यानी धुएं वाली धुन्ध का कारण बनती हैं। इससे लोगों की शवसन संबंधी परेशानियां बढ़ जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी में मौजूद फायदेमंद जीवाणु व केंचुएं भी मर जाते हैं। डॉ. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी अधिकारी डॉ.सुरेंद्र सिहाग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉलीहाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर द्वारा गांव साहू में आयोजित किसान मेले में मौजूद किसान व संबोधित करते वक्ता।

प्रत्येक केवीके में लगाए जाएंगे किसान मेले

विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-निदेशक(किसान परामर्श केंद्र)डॉ. सुनील ढांडा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अक्तूबर में आयोजित वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेषों के बीच में ही हैप्पी सीडर व जीरो टिलेज से बिजाई जैसी जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	**08.11.2020**	——	--

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान : वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में आयोजित किया किसान मेला

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे

में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई करने का आह्वान किया ताकि फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उर्वरा शक्ति बढ़ाई जा सके। मेले में आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवार नियंत्रण, बागवानी व पशु पालन की जानकारी दी गई। कोरोना संक्रमण के चलते सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटाइजेशन का विशेष ध्यान रखा गया। इस दौरान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी वह अन्य विभागों की स्टाल भी लगाई गई।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्मॉग वाली धुंध : अभियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं जो स्मॉग यानी धुएं वाली धुन्ध का कारण बनती हैं। इससे लोगों की शवसन संबंधी परेशानियां बढ़ जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी में मौजूद फायदेमंद जीवाणु व केंचुएं भी मर जाते हैं। डॉ. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी अधिकारी डॉ.सुरेंद्र सिहाग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉलीहाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।

प्रत्येक केवीके में लगाए जाएंगे किसान मेले : विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-निदेशक (किसान परामर्श केंद्र) डॉ. सुनील ढांडा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अक्तूबर में आयोजित वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेषों के बीच में ही हैप्पी सीडर व जीरो टिलेज से बिजाई जैसी जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	**07.11.2020**	——	--

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान : वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में आयोजित किया किसान मेला

वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब हर कृषि विज्ञान केंद्र पर किसान मेले आयोजित कर रहा एचएयू

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है।

इसी कड़ी में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके।

पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई करने का आह्वान किया ताकि फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उर्वरा शक्ति बढ़ाई जा सके। मेले में आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्मॉग वाली धुंध

अभियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं जो स्मॉग यानी धुएं वाली धुन्ध का कारण बनती हैं। इससे लोगों की शवसन संबंधी परेशानियां बढ़ जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी में मौजूद फायदेमंद जीवाणु व केंचुएं भी मर जाते हैं। डॉ. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी अधिकारी डॉ.सुरेंद्र सिहाग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉलीहाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।

विज्ञान केन्द्र में लगाए जाएंगे किसान मेले

विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-निदेशक(किसान परामर्श केंद्र)डॉ. सुनील ढांडा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अक्तूबर में आयोजित वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेषों के बीच में ही हैप्पी सीडर व जीरो टिलेज से बिजाई जैसी जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगत क्रान्ति	**07.11.2020**	——	--

किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

हिसार/विनोद गांधी : धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

इन वैज्ञानिकों ने किया अनुसंधान, सकारात्मक परिणाम आने पर किसानों के लिए की सिफारिश पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरूण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंघाल, डॉ. लीला बोरा व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी(करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	**07.11.2020**	——	**--**

पराली का प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसानः वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में आयोजित किया किसान मेला

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। मेले में आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। इस दौरान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी वह अन्य विभागों की स्टाल भी लगाई गई।

हिसार। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर द्वारा साह में आयोजित मेले में मौजूद किसान व संबोधित करते वक्ता।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्मॉग वाली धुंध

अभियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं जो स्मॉग यानी धुएं वाली धुन्ध का कारण बनती हैं। इससे लोगों की शवसन संबंधी परेशानियां बढ़ जाती हैं। डॉ. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी अधिकारी डॉ.सुरेंद्र सिहाग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉलीहाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।

प्रत्येक केवीके में लगाए जाएंगे किसान मेले

विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-निदेशक (किसान परामर्श केंद्र) डॉ. सुनील ढांडा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अक्तूबर में आयोजित वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेषों के बीच में ही हैप्पी सीडर व जीरो टिलेज से बिजाई जैसी जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**08.11.2020**	——	--

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान

● हकृवि के वैज्ञानिकों ने किसानों को बताए फसल के अवशेष ना जलाने के लाभ

हिसार, 7 नवंबर (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है।

इसी कड़ी में कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई करने का आह्वान किया।

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर द्वारा गांव साहू में आयोजित किसान मेले में मौजूद किसान व संबोधित करते वक्ता।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्मॉग वाली धुंध

अभियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं जो स्मॉग यानी धुएं वाली धुन्ध का कारण बनती हैं। इससे लोगों की श्वसन संबंधी परेशानियां बढ़ जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी में मौजूद फायदेमंद जीवाणु व केंचुएं भी मर जाते हैं। डॉ. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं।

प्रत्येक केवीके में लगाए जाएंगे किसान मेले

विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-निदेशक (किसान परामर्श केंद्र) डॉ. सुनील डांडा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अक्तूबर में आयोजित वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेषों के बीच में ही हैप्पी सीडर व जीरो टिलेज से बिजाई जैसी जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**07.11.2020**	——	--

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान : डा. नरेंद्र

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई करने का आह्वान किया ताकि फसल अवशेषों को

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में आयोजित किया किसान मेला

जलाने की बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उर्वरा शक्ति बढ़ाई जा सके। मेले में आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवार नियंत्रण, बागवानी व पशु पालन की जानकारी दी गई। कोरोना संक्रमण के चलते सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटाइजेशन का विशेष ध्यान रखा गया। इस दौरान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी वह अन्य विभागों की स्टाल भी लगाई गई।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्मॉग वाली धुंध

अभियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धूएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती है जो स्मॉग यानी धूएं वाली धुन्ध का कारण बनती हैं। इससे लोगों की शवसन संबंधी परेशानियां बढ़ जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी में मौजूद फायदेमंद जीवाणु व केंचुएं भी मर जाते हैं। डॉ. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी अधिकारी डॉ.सुरेंद्र सिहाग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉलीहाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।

प्रत्येक केवीके में लगाए जाएंगे किसान मेले

विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-निदेशक(किसान परामर्श केंद्र)डॉ. सुनील ढांडा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अक्तूबर में आयोजित वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेषों के बीच में ही हैप्पी सीडर व जीरो टिलेज से बिजाई जैसी जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	**07.11.2020**	ऑनलाइन	--

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में आयोजित किया किसान मेला

वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब हर कृषि विज्ञान केंद्र पर किसान मेले आयोजित कर रहा एचएयू

हिसार,

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई करने का आह्वान किया ताकि फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उवर्रा शक्ति बढ़ाई जा सके। मेले में आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवार नियंत्रण, बागवानी व पशु पालन की जानकारी दी गई। कोरोना संक्रमण के चलते सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटाइजेशन का विशेष ध्यान रखा गया। इस दौरान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी वह अन्य विभागों की स्टाल भी लगाई गई।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्मॉग वाली धुंध

अभियंता गोपीराम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं जो स्मॉग यानी धुएं वाली धुन्ध का कारण बनती हैं। इससे लोगों की श्वसन संबंधी परेशानियां बढ़ जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी में मौजूद फायदेमंद जीवाणु व केंचुएं भी मर जाते हैं। डॉ. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी अधिकारी डॉ.सूरत सिहाग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे मसरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉलीहाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।

प्रत्येक केवीके में लगाए जाएंगे किसान मेले

विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-निदेशक (किसान परामर्श केंद्र) डॉ. सुनील ढांडा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अक्टूबर में आयोजित वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेषों के बीच में ही हैप्पी सीडर व जीरो टिलेज से बिजाई जैसी जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जागरुकता अभियान भी चलाए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 9.11.2022 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 7-8

एचएयू में मशरूम उत्पादन तकनीक पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है।

प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम............दैनिक जागरण............

दिनांक 9.11.2020...........पृष्ठ संख्या.........3...........कॉलम.........3-5.........

पराली से खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते किसान : चुघ

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुंब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुंब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुंब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

प्रतीकात्मक तस्वीर • जागरण आर्काइव

एचएयू का गेट • जागरण आर्काइव

मार्केटिंग सहित अन्य विषयों पर दी जानकारी: संयोजिका डा. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुंब में होने वाले कीड़े-मकोड़ों व बीमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डा. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी।

35 प्रशिक्षणार्थी ले रहे हैं प्रशिक्षण: इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम .... पंजाब केसरी ....

दिनांक ..9.11.2020.. पृष्ठ संख्या ....2.... कॉलम ....1-3....

कम लागत से मशरूम व्यवसाय शुरू कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान

मशरूम उत्पादन तकनीक पर 3 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

प्रतिभागियों से ऑनलाइन रूबरू होते वैज्ञानिक।

हिसार, 8 नवम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में 3 दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया।

35 प्रशिक्षणार्थी ले रहे प्रशिक्षण : इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम: हरि भूमि

दिनांक 9.11.2020 पृष्ठ संख्या 9 कॉलम 2-4

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं किसान

हरिभूमि न्यूज >>| हिसार

■ तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर आरंभ

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा की देखरेख में किया जा रहा है। संस्थान के सहनिदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर कम लागत में खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि की जानकारी दी। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ो व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग की जानकारी दी। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने तथा बिजाई के तरीकों के साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। 35 प्रशिक्षणार्थी ले रहे प्रशिक्षण प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी शिरकत कर रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	**09.11.2020**	——	--

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान

मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

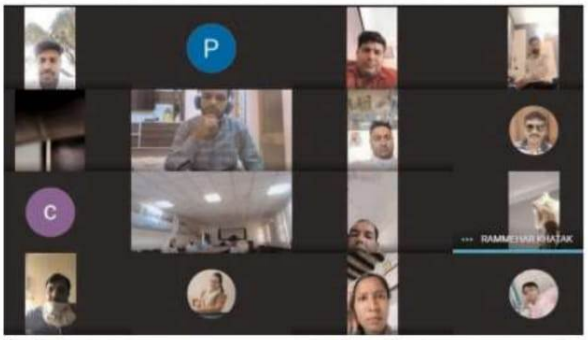

हैलो हिसार न्यूज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ो व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

कहा, तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरु किया जा सकता है

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	**09.11.2020**	——	--

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान

हिसार, (सुरेंद्र सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते है और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते है। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़े व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	**09.11.2020**	——	--

पराली से भी खाद तैयार कर करें मशरूम उत्पादन

मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

टुडे न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे

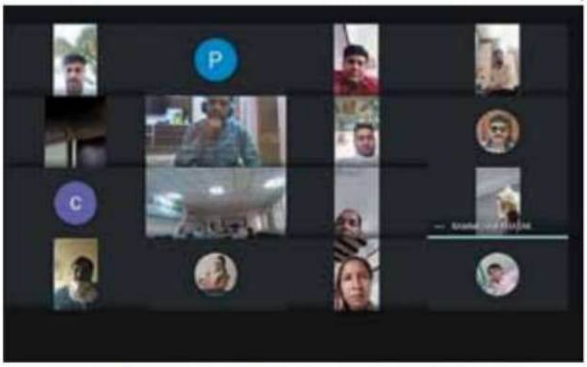

प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों से ऑनलाइन रूबरू होते वैज्ञानिक।

खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ो व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

35 प्रशिक्षणार्थी ले रहे हैं प्रशिक्षण : इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	**09.11.2020**	——	--

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान

मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ो व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल हिसार	**08.11.2020**	——	--

मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

पल पल न्यूज: हिसार, 8 नवंबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल हिसार	**08.11.2020**	——	--

किसानों को जागरूक करने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र ने लगाया मेला

जिसमें आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने लिया भाग

किसान पराली को जलाने की बजाए जमीन में मिलाने का कार्य करें इससे भूमि की उपजाऊ शक्ति बढ़ेगी व पर्यावरण में प्रदूषण भी होगाः अजीत सांगवान

पल पल न्यूजः आदमपुर, 8 नवम्बर (ऐलावादी)। सदलपुर के कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा साहू गांव में इन सीटू क्रॉप रेसिदू मैनेजमेंट परियोजना के तहत फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर किसान मेले का आयोजन किया गया। जिसमें आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवार नियंत्रण, बागवानी व पशु पालन की जानकारी दी गई। कोरोना संक्रमण को लेकर मेले में विशेष सावधानी बरती गई सभी किसानों को मास्क वितरित किए गए। इस मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी वह अन्य विभागों की स्टाल एग्जीबिशन भी लगाई गई। केंद्र के को-ऑर्डिनेटर डा. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिलाकर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन का स्वास्थ्य व उपजाऊपन सुधरे। उन्होंने कहा कि पराली जलाना किसी भी सूरत में फायदेमंद नहीं है पराली जलाने से किसानों का ही नुकसान होता है वही प्रालि का उचित प्रबंधन कर कर उसकी खाद बनाकर या फिर बिक्री कर कर किसान इससे लाभ उठा सकते हैं इसके लिए किसानों में जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है। अजीत सांगवान ने कहा कि किसान पराली को जलाने की बजाए जमीन में मिलाने का कार्य करें इससे भूमि की उपजाऊ शक्ति बढ़ेगी व पर्यावरण में प्रदूषण भी होगा। उन्होंने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनें जैसे रोटावेटर, हैप्पी सीडर, जीरो ड्रिल आदि के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। उन्होंने बताया कि किसान जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई कर सकते हैं व दूसरे किसानों के मुकाबले अधिक उत्पादन ले सकते हैं। गोपीराम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट होते हैं जिसकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। डा. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी है। जिला बागवानी अधिकारी डा. सुरेंद्र सिहाग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार की स्कीमों जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉली हाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी किसान को जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	**08.11.2020**	——	--

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 8 नवम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ो व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	**08.11.2020**	——	--

मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ो व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

35 प्रशिक्षणार्थी ले रहे हैं प्रशिक्षण

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी करेंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 9.11.2020 पृष्ठ संख्या 6 कॉलम 1-8

मंडे पॉजिटिव ■ एचएयू की एसोसिएट प्रोफेसर और कल्चरल कोआर्डिनेटर संध्या का नया तरीका, साइंस विषय की जटिलताओं को विद्यार्थियों के लिए बना रहा सरल

संध्या ने स्वांग शैली में तैयार किए साइंस बेस्ड चैप्टर, एनसीआरटी ने दिया प्रोजेक्ट

अंशुल पांडेय। हिसार

अक्सर स्कूली बच्चे साइंस जैसे सब्जेक्ट्स से दूर भागते नजर आते हैं। इसके पीछे बच्चों का तर्क होता है कि उन्हें विज्ञान के अंदर छिपे रहस्य समझ नहीं आ रहे। ऐसे में शहर के एचएयू की एसोसिएट प्रोफेसर और कल्चरल कोआर्डिनेटर संध्या शर्मा ने बच्चों को साइंस समझाने का एक नया रास्ता निकाला है, जिससे बच्चे आसानी से मस्ती में गाते-गुनगुनाते साइंस सब्जेक्ट को समझ पा रहे हैं। खास यह है कि संध्या के इस प्रयास में एनसीआरटी भी जुड़ चुकी है। दरअसल संध्या शर्मा ने नेशनल कांउसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एनसीआरटी) के नौवीं कक्षा के एक चैप्टर को स्वांग शैली में बदला जिसके बाद अब बच्चे इस चैप्टर को आसानी से समझ भी पा रहे हैं और इसे पढ़ने में इंट्रेस्ट भी दिखा रहे हैं। हुआ यूं कि संध्या शर्मा को एनसीआरटी केमिस्ट्री की रिसर्च सेक्रेटरी रूचि वर्मा ने विक्रमादित्य की कहानी को स्वांग शैली में प्रस्तुत करते हुए देखा जिससे बाद उन्हें विचार आया कि अगर साइंस से जुड़े चैप्टर्स को लोककलाओं के माध्यम से पढ़ाया जाए तो बच्चे आसानी से इन्हें समझ पाएंगे। इसके बाद उन्होंने संध्या शर्मा को साइंस के एक चैप्टर को स्वांग शैली में तैयार करने को कहा। इसे स्वांग संग विज्ञान का नाम दिया गया। संध्या ने नौवीं कक्षा के जीव जनन के पाठ को स्वांग शैली में तैयार किया, जो एनसीआरटी को पसंद आए। इसी वजह से अब संध्या शर्मा को अन्य कई चैप्टर्स को इस शैली में तैयार करने का प्रोजेक्ट दिया गया है।

सॉन्ग की प्रस्तुति देती एच यू एसोसिएट प्रोफेसर संध्या शर्मा

बच्चों को समझने में हो आसानी इसलिए ठेठ नहीं बोलचाल के हरियाणवी अंदाज में तैयार किया स्वांग

एनसीआरटी की ओर से तैयार किए गए इन वीडियोज का फायदा पूरे देश के स्टूडेंट उठा पाएं इसके लिए संध्या ने ठेठ हरियाणवी के बजाए केवल अंदाज को ही इस्तेमाल किया। उन्होंने हिंदी को हरियाणवी अंदाज में स्वांग शैली में प्रस्तुत किया जिससे देश भर के स्टूडेंट्स इसे समझ पाए और खुद को इसके साथ जोड़ पाए। संध्या ने स्वांग की प्रस्तुति में हरियाणवी एसेंट ही रखा मगर इसका नरेशन हिंदी में रखा। जिससे बच्चे इसे आसानी से समझ पाएं। इस स्वांग प्रस्तुति में संध्या शर्मा के साथ हरमोनियम में रविन्द्र नागर और नगाडे में सुभाष नगाड़ा ने साथ दिया।

स्वांग में लोकगीतों, संगीत और नृत्य से प्रस्तुत की जाती लोककथाएं

स्वांग एक ऐसी हरियाणवी विधा है जिसमें लोककथाओं को लोकगीत,संगीत और नृत्य आदि से नाट्यबद्ध किया जाता है। इस शैली का इस्तेमाल अब तक लोककथाओं को आम जन तक पहुंचाने के लिए किया जाता रहा है। हरियाणवी स्वांग परंपरा बहुत पुरानी है। स्वांग में हरियाणवी संस्कृति के दर्शन होते हैं और हरियाणवी जन-जीवन की झलक मिलती है।

2 महीने में तैयार किया स्वांग, समझाया जीव जनन का चैप्टर

संध्या शर्मा ने बताया कि इस स्वांग को उन्होंने 2 महीने की मेहनत से तैयार किया। एक घंटे के इस स्वांग में साइंस के जीव जनन के पाठ के जरिए बच्चों को भ्रूण हत्या के प्रति अवेयर करने का भी काम किया। संध्या के अनुसार अगर बच्चों को बचपन से ही अवेयर किया जाए तो भ्रूण हत्या जैसी बुराइयों को दूर किया जा सकता है। संध्या शर्मा ने बताया कि इस प्रोजेक्ट को स्टूडेंट्स के साथ टीचर्स ने भी पसंद किया जिसके बाद अब 16 से 21 नवंबर तक के लिए एनसीआरटी एक वर्कशॉप आर्गेनाइज करवाने जा रहे जिसमें एन्वायरमेंटल सेफ्टी और पॉल्यूशन फ्री एन्वायरनमेंट सब्जेक्ट पर संध्या स्वांग की प्रस्तुति देगी।